# सफल उद्यमिता में एबीआई-द्राक्षा की प्रभावी भूमिका

**अजय कुमार शर्मा** और **डी.एस. यादव**

कृषि में उद्यमिता की सफलता केवल नए उत्पाद बनाने पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि किसी स्थानीय संसाधन, शोध आधारित विचार या पारंपरिक कृषि उत्पाद को किस प्रकार मूल्यवर्धित, उपयोगी और बाजारोन्मुख रूप दिया जाए। जब किसी नवाचार को तकनीकी समझ, प्रसंस्करण, उपभोक्ता की आवश्यकता, बाजार संपर्क और सामाजिक उपयोगिता के साथ जोड़ा जाता है, तब वह आजीविका का मजबूत माध्यम बन सकता है। यही वह दृष्टिकोण है, जो एबीआई-द्राक्षा जैसे मंच को महत्वपूर्ण बनाता है। एक ओर यह शोध और नवाचार को आगे बढ़ाने की संभावना दर्शाता है, तो दूसरी ओर यह बताता है कि किसानों, युवाओं और समुदायों के लिए टिकाऊ उद्यम कैसे विकसित किए जा सकते हैं।

एबीआई-द्राक्षा जैसे संस्थागत मंच का महत्व इस बात में है कि यह किसी विचार को केवल प्रयोगशाला या अवधारणा तक सीमित नहीं रहने देता, बल्कि उसे व्यावसायिक रूप देने की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करता है। नवाचारों पर आधारित उद्यमों का विकास निश्चित रूप से आजीविका के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। उद्यम ही आजीविका को सशक्त बनाने में अपना योगदान देते हैं। एबीआई-द्राक्षा, नवाचारों को उद्यम में विकसित करने में जुटा हुआ है। नवाचारों पर आधारित सफलता गाथाओं को निम्न प्रकार में समझा जा सकता है:

प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, मांजरी, पुणे-412307 (महाराष्ट्र)

### सफलता गाथा 1

**शोध से बाजार तक एक मूल्यवर्धित उत्पाद की यात्रा**

पहली प्रेरक यात्रा एक छात्रा कुमारी रिद्धि राणे की है, जिन्होंने भाकृअनुप-राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र में अपने प्रशिक्षण के दौरान अंगूर मणि की विरलन प्रक्रिया में गुच्छों से निकाले गए कच्चे अंगूरों से एक मूल्यवर्धित उत्पाद विकसित करने पर कार्य शुरू किया। यह विचार अत्यंत व्यावहारिक था। इसका उद्देश्य उन अधिशेष और कम उपयोग में आने वाले कच्चे अंगूरों का उपयोग करना था, जो सामान्यत: पर्याप्त आर्थिक मूल्य नहीं दे पाते हैं। इस उत्पाद को वरजूस के नाम से जाना जाता है। वरजूस को एक प्राकृतिक खट्टापन देने वाले अवयव के रूप में देखा जाता है, जो सिरका और नीबू रस का विकल्प बन सकता है। इस प्रकार यह विचार केवल एक खाद्य उत्पाद नहीं था, बल्कि अंगूर उत्पादकों के लिए अतिरिक्त मूल्य सृजन और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए बाजार में एक नया विकल्प लाना भी था।

**तकनीकी समझ और मानकीकरण का महत्व**

इस यात्रा का अगला महत्वपूर्ण चरण था, तकनीकी समझ को मजबूत करना। उत्पाद के लिए कच्चे उत्पाद की प्रकृति को समझना, प्रसंस्करण विधि का मानकीकरण करना और उसके संभावित उपयोगों का परीक्षण करना आवश्यक था। इस प्रक्रिया ने यह स्पष्ट किया कि किसी शोध विचार को उद्यम में बदलने के लिए केवल कल्पना पर्याप्त नहीं होती, उसके लिए वैज्ञानिक परीक्षण, प्रक्रिया सुधार और उपयोगिता का मूल्यांकन भी उतना ही जरूरी होता है। इसी चरण ने उद्यमी को तकनीकी आत्मविश्वास दिया और उसे अकादमिक सीमा से आगे सोचने के लिए प्रेरित किया।

तकनीकी आधार बनने के बाद इस विचार को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया। शोध-आधारित प्रयास को व्यावसायिक रूप देने की दिशा में कदम बढ़ाए गए और एक स्टार्टअप 'राजयोग एग्रो' की स्थापना हुई। इस दौरान प्रसंस्करण तकनीक को और परिष्कृत किया गया, नियामकीय आवश्यकताओं को समझा गया और बाजार की संभावनाओं का

मूल्यवर्धित अंगूर जूस

अध्ययन भी किया गया। शुरुआती चरण में सीमित उत्पादन, साधारण पैकेजिंग, कच्चे उत्पाद की उपलब्धता, ग्राहक तक पहुंच, आपूर्ति शृंखला और उत्पाद की स्थिति तय करना-ये सभी सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा रहे। यह अनुभव बताता है कि उद्यमिता का मार्ग क्रमिक होता है, छोटे स्तर से शुरुआत कर धीरे-धीरे विस्तार किया जा सकता है।

### सफलता गाथा 2

### किसानों, पोषण और बाजार को जोड़ता सामुदायिक उद्यम

दूसरी प्रेरक यात्रा एक ऐसे सामाजिक उद्यम की है, जिसकी पृष्ठभूमि ग्रामीण किसानों, पोषण संबंधी चुनौतियों और बदलती खाद्य आदतों से जुड़ी थी। सूखा प्रभावित क्षेत्रों में उगाई जाने वाली पारंपरिक श्री अन्न फसलें पोषण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थीं, परंतु समय के साथ वे दैनिक आहार और बाजार दोनों से पीछे छूटती गईं। इससे दो समस्याएं एक साथ सामने आईं-किसानों को अपनी उपज विशेषरूप से श्री अन्न का उचित मूल्य नहीं मिल रहा था और समुदाय, विशेषकर बच्चे, पौष्टिक पारंपरिक खाद्य उत्पादों से दूर हो रहे थे।

इस स्थिति में मिलेट्स नाउ के प्रवर्तक श्री महेश लोंढे जी ने यह विचार विकसित किया कि यदि इन पारंपरिक फसलों विशेषकर श्री अन्न को पुनः आधुनिक जीवनशैली और उपभोक्ता आवश्यकता से जोड़ा जाए, तो किसान और उपभोक्ता दोनों को लाभ मिल सकता है।

### प्रेरणा

राजयोग एग्रो का अनुभव इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि एक साधारण शैक्षणिक परियोजना भी आगे चलकर व्यावहारिक उद्यम का रूप ले सकती है। इससे यह संदेश मिलता है कि यदि किसी युवा नवप्रवर्तक को सही मार्गदर्शन, तकनीकी सहयोग और व्यावसायिक दृष्टि मिले, तो वह किसानों के लिए मूल्य सृजन करने वाला, उपभोक्ताओं के लिए नया उत्पाद देने वाला और बाजार में अपनी अलग पहचान बनाने वाला उद्यम विकसित कर सकता है। इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण तत्व थे-समस्या की पहचान, स्थानीय संसाधन का उपयोग, वैज्ञानिक मानकीकरण और चरणबद्ध व्यावसायिक विस्तार। राजयोग एग्रो स्टार्टअप की स्थापना तथा विस्तार एक प्रेरणा स्रोत बनके सबके समक्ष है। एबीआई-द्राक्षा ने इस स्टार्टअप का सहयोग किया और एक विचार को उद्यम में बदलने में अपनी भूमिका निभाई।

कच्चे अंगूरों से तैयार पेय

### किसानों के साथ सीधी साझेदारी और मूल्य शृंखला निर्माण

पुणे के पास स्थित एक कस्बे में एग्रोजी ऑर्गेनिक प्राइवेट लिमिटेड नामक स्टार्टअप की स्थापना श्री महेश लोंढे जी द्वारा की गई। इस पहल में छोटे किसानों के साथ सीधे काम करने पर जोर दिया गया। ये किसान सीमित भूमि, वर्षा आधारित खेती और कम संसाधनों के बावजूद ऐसी फसलें उगा रहे थे, जो कम पानी में भी अच्छी तरह बढ़ सकती थीं। लेकिन मुख्य समस्या श्री अन्न हेतु संगठित बाजार की कमी थी, जिसके कारण किसानों को कम कीमत मिलती थी।

इस स्थिति को बदलने के लिए किसानों के साथ साझेदारी बनाकर एक सीधी मूल्य शृंखला तैयार की गई, ताकि उन्हें बेहतर दाम मिल सके और दूर दराज क्षेत्रो में टिकाऊ कृषि पद्धतियों को भी बढ़ावा मिल सके। एग्रोजी ऑर्गेनिक का यह मॉडल इस बात का प्रमाण है कि कृषि उद्यमिता केवल उत्पाद बेचने तक सीमित नहीं होनी चाहिए; उसे किसानों की आय और खेती की स्थिरता से भी जुड़ना चाहिए।

### पारंपरिक खाद्य उत्पादों को आधुनिक रूप देना

इस उद्यम की दूसरी बड़ी विशेषता थी पारंपरिक श्री अन्न आधारित पोषक खाद्य उत्पादों को आधुनिक उपभोक्ताओं के लिए सुविधाजनक और आकर्षक बनाना। आज कई लोग पौष्टिक खाद्य उत्पादों का महत्व समझते हैं, लेकिन वे ऐसे विकल्प चाहते हैं, जो स्वादिष्ट हों, उपयोग में आसान हों और आधुनिक पैकेजिंग के साथ उपलब्ध हों। इस आवश्यकता को ध्यान में रखकर एग्रोजी ऑर्गेनिक प्रा.लि. (मिलेट्स नाउ) द्वारा विभिन्न पौष्टिक स्नैक्स, नाश्ते और रेडी-टू-कुक विकल्प विकसित किए गए। यहां मूल विचार यह था कि पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक सुविधा का ऐसा मेल बनाया जाए, जो बाजार में स्वीकार्य भी हो और स्वास्थ्य के लिए उपयोगी भी।

### पोषण, स्कूलों और समुदाय से जुड़ाव

इस स्टार्टअप की सफलता की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि इसे केवल व्यवसाय के रूप में नहीं, बल्कि पोषण सुधार और सामुदायिक भागीदारी से भी जोड़ा गया। बच्चों के आहार में पोषक तत्वों की कमी को देखते हुए स्कूलों और पोषण कार्यक्रमों के साथ जुड़कर श्री अन्न आधारित ऐसे खाद्य उत्पादों को बढ़ावा दिया गया, जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पोषण से भरपूर भी हों।

इससे एक ओर बच्चों को बेहतर आहार विकल्प मिले, तो दूसरी ओर मिलेट नाउ को सामाजिक उद्देश्य भी मिला। यह पहल बताती है कि कृषि-आधारित उद्यम तब

अधिक प्रभावी बनते हैं, जब वे समाज की किसी वास्तविक समस्या का समाधान भी प्रस्तुत करते हैं और इस दिशा में श्री अन्न नाउ बहुत ही सकारात्मक परिवर्तन करने में जुटा हुआ है।

**जागरूकता, समुदाय भागीदारी और महिला अवसर**

इस यात्रा में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक थी लोगों को श्री अन्न आधारित पारंपरिक खाद्य उत्पादों की ओर पुनः आकर्षित करना। इसके लिए कार्यशालाएं, स्वाद परीक्षण, प्रदर्शनियां, पाक प्रदर्शन और जागरूकता अभियान चलाए गए। इन गतिविधियों ने न केवल उपभोक्ताओं को जागरूक किया, बल्कि महिलाओं के समूहों और स्थानीय छोटे उद्यमियों के लिए प्रसंस्करण एवं लघु व्यवसाय के अवसर भी तैयार किए। इससे स्पष्ट है कि सफल कृषि उद्यमिता केवल उत्पादन और बिक्री नहीं, बल्कि समुदाय निर्माण और सामाजिक सहभागिता का भी माध्यम बन सकती है।

**जलवायु-स्मार्ट दृष्टि और दीर्घकालिक सोच**

इस श्री अन्न सफलता गाथा की सबसे दूरदर्शी बात यह है कि इसमें कृषि, पोषण, उद्यमिता और पर्यावरण चारों को एक साथ देखा गया। कम जल, कम संसाधन और कठिन जलवायु में भी उगने वाली फसलों को बढ़ावा देना केवल बाजार की रणनीति नहीं, बल्कि टिकाऊ कृषि प्रणाली की दिशा में एक कदम है। किसानों के लिए स्थिर मांग तैयार करना, लोगों को अधिक पौष्टिक विकल्प देना और

बहु श्री अन्न से बने लड्डू

खाद्य प्रणाली को अधिक टिकाऊ बनाना-ये सभी इस मॉडल की दीर्घकालिक विशेषताएं हैं। यही कारण है कि यह पहल केवल स्टार्टअप नहीं, बल्कि ग्रामीण आजीविका और सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनती दिखाई देती है।

इस प्रकार एबीआई-द्राक्षा सफल उद्यमियों की सेवा में एक प्रेरक और उपयोगी मंच सिद्ध हो सकता है। वर्णित अनुभव यह बताते हैं कि कृषि उद्यमिता का भविष्य केवल उत्पादन में नहीं, बल्कि मूल्य संवर्धन, नवाचार, पोषण, समुदाय सहभागिता और टिकाऊ बाजार निर्माण में निहित है। एक साधारण शोध विचार या पारंपरिक कृषि संसाधन भी सही दिशा, निरंतर प्रयास और संस्थागत सहयोग से सफल उद्यम का आधार बन सकता है। यही वह संदेश है, जो आज के युवाओं, किसानों और नवप्रवर्तकों के लिए सबसे अधिक प्रेरक है।

चॉकलेट लेपित किशमिश

कृषि-आधारित उद्यमिता की सफलता के लिए तकनीकी समझ, मूल्यवर्धन, बाजार संपर्क और सामाजिक उपयोगिता का समन्वय आवश्यक है। एक प्रेरक अनुभव यह दिखाता है कि शोध-आधारित उत्पाद को क्रमिक प्रयासों से सफल स्टार्टअप में बदला जा सकता है। दूसरा अनुभव बताता है कि किसानों, पोषण, समुदाय और आधुनिक बाजार को जोड़कर टिकाऊ और प्रभावी उद्यम विकसित किया जा सकता है। एबीआई-द्राक्षा जैसे मंच इन दोनों प्रकार के नवाचारों को दिशा देकर सफल उद्यमियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ■

## सफलता गाथाओं से सीख

राजयोग एग्रो तथा मिलेट्स नाउ के प्रेरक अनुभवों से कुछ बहुत महत्वपूर्ण बातें स्पष्ट होती हैं। पहली, किसी भी सफल कृषि उद्यम की शुरुआत किसी वास्तविक समस्या की पहचान से होती है। दूसरी, स्थानीय संसाधनों या पारंपरिक फसलों को मूल्यवर्धन के माध्यम से नई पहचान दी जा सकती है। तीसरी, वैज्ञानिक समझ, प्रसंस्करण, आधुनिक पैकेजिंग, बाजार संपर्क और समुदाय सहभागिता-ये सभी उद्यम की सफलता के आवश्यक घटक हैं। चौथी, यदि उद्यम किसानों, बच्चों, महिलाओं या स्थानीय समुदायों को लाभ पहुंचाता है, तो उसका प्रभाव अधिक व्यापक और टिकाऊ होता है।

**एबीआई-द्राक्षा के लिए महत्व**

एबीआई-द्राक्षा जैसे मंच के लिए ये दोनों अनुभव अत्यंत प्रासंगिक हैं। ये दिखाते हैं कि कृषि आधारित नवाचार को किस प्रकार सफल उद्यमिता में बदला जा सकता है। एक ओर शोध आधारित विचार को बाजार तक ले जाने की प्रक्रिया सामने आती है, तो दूसरी ओर किसान, पोषण और समुदाय आधारित मूल्य श्रृंखला का मॉडल दिखाई देता है। इन दोनों प्रकार की यात्राएं यह संकेत देती हैं कि यदि नव प्रवर्तकों को उपयुक्त मार्गदर्शन, प्रसंस्करण सहयोग, तकनीकी सहायता और उद्यम परामर्श मिले, तो वे कृषि क्षेत्र में सफल और सामाजिक रूप से उपयोगी उद्यम स्थापित कर सकते हैं।